

डॉ. गिरजा शंकर गुप्ता
सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य)
दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)।
सामाजिक अंकेक्षण एक अध्ययन

प्रस्तावना

सोशल ऑडिट किसी कंपनी के लिए एक बहुत विस्तृत जांच की तरह है। यह सिर्फ़ पैसे के बारे में नहीं है, बल्कि यह भी देखता है कि कंपनी सामाजिक और नैतिक रूप से कैसा प्रदर्शन कर रही है। यह जाँचना है कि क्या कंपनी पर्यावरण की देखभाल, कर्मचारियों के साथ अच्छा व्यवहार, समुदाय में शामिल होना और नैतिक रूप से व्यवसाय करना जैसी चीज़ों के बारे में अपने वादे निभा रही है। ऑडिट अलग-अलग हिस्सों को देखता है, जैसे कि कंपनी सामाजिक नियमों का कितनी अच्छी तरह से पालन करती है, अलग-अलग लोगों (जैसे कर्मचारी और पड़ोसी) से उनकी राय जानने के लिए बात करती है और यह सुनिश्चित करती है कि कंपनी हर चीज़ के बारे में खुली और ईमानदार है। चाहे कंपनी यह जाँच खुद करे या किसी बाहरी व्यक्ति से करवाए, इसका लक्ष्य यह जानना है कि कंपनी सामाजिक ज़िम्मेदारी में कैसे बेहतर प्रदर्शन कर सकती है। यह सिर्फ़ अच्छा दिखने के बारे में नहीं है - यह वास्तव में अच्छा करने और सभी को यह दिखाने के बारे में है कि कंपनी सही काम करने की परवाह करती है।

सामाजिक अंकेक्षण की विशेषताएं

सामाजिक ऑडिट व्यापक मूल्यांकन हैं जो किसी संगठन की सामाजिक ज़िम्मेदारियों के प्रति प्रतिबद्धता का आकलन करते हैं, जिसमें पर्यावरणीय स्थिरता, नैतिक व्यावसायिक आचरण और सामुदायिक जुड़ाव जैसे महत्वपूर्ण पहलू शामिल होते हैं। ये ऑडिट ज़िम्मेदार व्यावसायिक प्रथाओं को बढ़ावा देने

और किसी संगठन के सामाजिक प्रभाव के लिए जवाबदेही सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सामाजिक ऑडिट की कुछ विशेषताएं इस प्रकार हैं:

1.सामाजिक उत्तरदायित्व मूल्यांकन: सामाजिक ऑडिट किसी संगठन द्वारा अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों को पूरा करने का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन करता है। इसमें पर्यावरणीय स्थिरता पहल, नैतिक व्यावसायिक प्रथाओं और सामुदायिक सहभागिता की सीमा की गहन जांच शामिल है।

2.हितधारक जुड़ाव: सामाजिक लेखापरीक्षा का एक अभिन्न अंग विभिन्न हितधारकों, जैसे कि कर्मचारियों, ग्राहकों, स्थानीय समुदायों और गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) को शामिल करना है। विविध दृष्टिकोणों को एकत्रित करने से संगठन के सामाजिक प्रभाव को व्यापक रूप से समझने में मदद मिलती है।

3.पारदर्शिता और जवाबदेही: सामाजिक ऑडिट पारदर्शिता को प्राथमिकता देते हैं, जिसके तहत संगठनों को अपने सामाजिक प्रदर्शन के बारे में खुलकर संवाद करने की आवश्यकता होती है। यह पारदर्शिता उनके संचालन से होने वाले किसी भी नकारात्मक प्रभाव को स्वीकार करने और उसकी जिम्मेदारी लेने तक फैली हुई है।

4.विनियमों का अनुपालन: सामाजिक लेखापरीक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू सामाजिक और नैतिक प्रथाओं से संबंधित प्रासंगिक कानूनों, विनियमों और उद्योग मानकों के साथ संगठन के अनुपालन का आकलन करना है।

5.प्रभाव आकलन: सामाजिक ऑडिट का उद्देश्य किसी संगठन की गतिविधियों के वास्तविक सामाजिक प्रभाव को मापना है। इसमें हितधारकों और व्यापक समुदाय पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के परिणामों का मूल्यांकन करना शामिल है।

6. नैतिक व्यावसायिक आचरण: नैतिक व्यावसायिक प्रथाओं का मूल्यांकन एक प्रमुख फोकस है, जिसमें कर्मचारियों के साथ निष्पक्ष व्यवहार, नैतिक सोर्सिंग और जिम्मेदार विपणन रणनीतियां शामिल हैं।

7. निरंतर सुधार: सामाजिक ऑडिट संगठनों के लिए उनके सामाजिक उत्तरदायित्व प्रथाओं में सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने के लिए एक गतिशील उपकरण के रूप में कार्य करता है। वे समय के साथ परिवर्तनों के कार्यान्वयन की सुविधा प्रदान करते हैं, जिससे निरंतर सुधार के लिए प्रतिबद्धता सुनिश्चित होती है।

सामाजिक अंकेक्षण के लाभ

सामाजिक लेखापरीक्षा के कुछ प्रमुख सामाजिक लाभ इस प्रकार हैं:

1. बेहतर सामाजिक उत्तरदायित्व: सामाजिक ऑडिट संगठनों के लिए सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को बढ़ाने के लिए एक सक्रिय उपकरण के रूप में कार्य करता है। ताकत और सुधार के क्षेत्रों की पहचान करके, कंपनियाँ अपनी प्रथाओं को परिष्कृत कर सकती हैं और समाज की भलाई में सकारात्मक योगदान दे सकती हैं।

2. हितधारकों के साथ बेहतर संबंध: सामाजिक लेखा परीक्षा प्रक्रिया में हितधारकों को शामिल करने से समावेशिता की भावना बढ़ती है और पारदर्शिता के प्रति प्रतिबद्धता प्रदर्शित होती है। यह बदले में, कर्मचारियों, ग्राहकों, समुदायों और अन्य हितधारकों के साथ संबंधों को मजबूत करता है, जिससे विश्वास और वफादारी का निर्माण होता है।

3. जोखिम न्यूनीकरण: सामाजिक ऑडिट संगठनों को सामाजिक और नैतिक प्रथाओं से जुड़े संभावित जोखिमों की पहचान करने और उनका समाधान करने में मदद करते हैं। इन जोखिमों का सक्रिय रूप से प्रबंधन करके, कंपनियाँ अपनी प्रतिष्ठा और वित्तीय प्रदर्शन पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों से बच सकती हैं।

4. विनियामक अनुपालन: सामाजिक और नैतिक विनियमों का अनुपालन सुनिश्चित करना सामाजिक ऑडिट का एक प्रमुख लाभ है। संगठन नियमित रूप से अपने व्यवहारों का मूल्यांकन करके और उन्हें प्रासंगिक कानूनों और मानकों के साथ जोड़कर कानूनी जटिलताओं, दंड और अपनी प्रतिष्ठा को होने वाले नुकसान से बच सकते हैं।

5. प्रतिस्पर्धात्मक लाभ: सकारात्मक सामाजिक लेखापरीक्षा परिणाम को प्रतिस्पर्धात्मक लाभ के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। उपभोक्ता और निवेशक तेजी से उन व्यवसायों को पसंद करते हैं जो सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हैं, जिससे प्रतिस्पर्धी बाजार में अनुकूल सामाजिक लेखापरीक्षा एक परिसंपत्ति बन जाती है।

6. नवाचार और दक्षता: सुधार के क्षेत्रों की पहचान के माध्यम से, सामाजिक ऑडिट संगठनों को अपनी सामाजिक जिम्मेदारी प्रथाओं को नया रूप देने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इस प्रक्रिया से अक्सर परिचालन दक्षता में वृद्धि होती है और अधिक टिकाऊ और नैतिक व्यवसाय मॉडल का विकास होता है।

7. कर्मचारी मनोबल और उत्पादकता: जब कर्मचारी किसी ऐसे संगठन के लिए काम करते हैं जो सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता रखता है, तो उनके प्रेरित और संलग्न होने की संभावना अधिक होती है। एक सकारात्मक सामाजिक लेखापरीक्षा परिणाम कर्मचारी मनोबल को बढ़ा सकता है, जिससे उत्पादकता में वृद्धि और अधिक सकारात्मक कार्यस्थल संस्कृति हो सकती है।

सामाजिक लेखा परीक्षा के मुख्य बिंदु

मुख्य बातें सकारात्मक सामाजिक प्रभाव पैदा करने में पारदर्शिता, निरंतर सुधार और हितधारक सहभागिता के महत्व पर जोर देती हैं। सामाजिक लेखापरीक्षा के कुछ मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं:

1. हितधारकों की भागीदारी: कर्मचारियों, ग्राहकों, समुदायों और गैर सरकारी संगठनों सहित विभिन्न हितधारकों के दृष्टिकोणों को शामिल करना सामाजिक

लेखापरीक्षा के लिए मौलिक है। यह समावेशी दृष्टिकोण संगठन के सामाजिक प्रभाव की अधिक गहन समझ सुनिश्चित करता है।

2. पारदर्शिता और जवाबदेही: सामाजिक ऑडिट पारदर्शिता पर जोर देते हैं, संगठनों को अपने सामाजिक प्रदर्शन के बारे में खुलकर संवाद करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। जवाबदेही एक महत्वपूर्ण परिणाम है, क्योंकि संगठन अपनी गतिविधियों से होने वाले सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों की जिम्मेदारी लेते हैं।

3. निरंतर सुधार: सामाजिक ऑडिट निरंतर सुधार के लिए एक गतिशील उपकरण के रूप में काम करते हैं। सुधार के लिए क्षेत्रों की पहचान करके, संगठन समय के साथ परिवर्तन लागू कर सकते हैं, सामाजिक जिम्मेदारी प्रथाओं में निरंतर सुधार के लिए प्रतिबद्धता प्रदर्शित कर सकते हैं।

4. जोखिम की पहचान और शमन: सामाजिक ऑडिट किसी संगठन के संचालन से जुड़े संभावित सामाजिक और नैतिक जोखिमों की पहचान करने में मदद करते हैं। यह सक्रिय दृष्टिकोण कंपनियों को जोखिमों को संबोधित करने और कम करने की अनुमति देता है, जिससे उनकी प्रतिष्ठा और संचालन के लिए नकारात्मक परिणामों से बचा जा सकता है।

5. अनुपालन और कानूनी अनुपालन: प्रासंगिक कानूनों, विनियमों और उद्योग मानकों का अनुपालन सुनिश्चित करना सामाजिक ऑडिट का मुख्य फोकस है। इससे न केवल संगठनों को कानूनी जटिलताओं से बचने में मदद मिलती है, बल्कि नैतिक और सामाजिक मानदंडों के साथ संरेखण भी सुनिश्चित होता है।

6. प्रतिस्पर्धात्मक लाभ: सकारात्मक सामाजिक लेखा परीक्षा परिणाम को प्रतिस्पर्धात्मक लाभ के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। ऐसे माहौल में जहां उपभोक्ता और निवेशक सामाजिक जिम्मेदारी को प्राथमिकता देते हैं, अनुकूल सामाजिक लेखापरीक्षा वाले संगठन बाजार में अच्छी स्थिति में होते हैं।

7.कर्मचारी जुड़ाव और संतुष्टि: सकारात्मक सामाजिक लेखा परीक्षा परिणाम कर्मचारी मनोबल और जुड़ाव को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं। जब कर्मचारी अपने संगठन को सामाजिक रूप से जिम्मेदार मानते हैं, तो यह एक सकारात्मक कार्यस्थल संस्कृति और बढ़ी हुई नौकरी की संतुष्टि में योगदान दे सकता है।

सामाजिक लेखापरीक्षा में जांचे गए विषय

नीचे कुछ वस्तुएं और उदाहरण दिए गए हैं जो सामूहिक रूप से एक व्यापक सामाजिक लेखापरीक्षा का आधार बनते हैं, जिससे संगठनों को विभिन्न आयामों में अपनी सामाजिक जिम्मेदारी प्रथाओं का आकलन करने में मदद मिलती है:

1.पर्यावरणीय स्थिरता: यहाँ जाँच की गई वस्तुएँ संगठन के पर्यावरणीय प्रभाव, संसाधन उपयोग, अपशिष्ट प्रबंधन और कार्बन पदचिह्न को कम करने के प्रयासों का आकलन हैं। ऑडिट में संसाधन उपयोग की जाँच की जाती है, जिसमें प्राकृतिक संसाधनों और कच्चे माल का जिम्मेदार प्रबंधन शामिल है। इसके अतिरिक्त, अपशिष्ट प्रबंधन प्रथाओं का गहन मूल्यांकन किया जाता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि संगठन अपशिष्ट को कम करने और पुनर्चक्रण को बढ़ावा देने के लिए प्रभावी रणनीतियों को लागू कर रहा है। उदाहरण के लिए ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन की माप, संधारणीय सोर्सिंग प्रथाओं का मूल्यांकन और पर्यावरणीय नुकसान को कम करने के लिए पहलों की जाँच।

2.नैतिक व्यावसायिक आचरण: यहाँ जाँच की गई वस्तु कर्मचारियों के साथ उचित व्यवहार का मूल्यांकन है। एक केंद्र बिंदु न्यायसंगत रोजगार प्रथाओं का गहन विश्लेषण है। इसमें संगठन की नीतियों और कार्यान्वयन की विस्तृत समीक्षा शामिल है ताकि इसके कर्मचारियों के साथ उचित और न्यायपूर्ण व्यवहार सुनिश्चित किया जा सके। ऑडिट विविधता, समान अवसर और उचित मुआवजे जैसे कारकों का आकलन करने के लिए विस्तारित होता है, जिसका उद्देश्य समावेशी और नैतिक कार्य वातावरण को बढ़ावा देने के लिए संगठन की प्रतिबद्धता का आकलन करना है। उदाहरण के लिए कर्मचारी कार्य स्थितियों

का मूल्यांकन, आपूर्ति शृंखला नैतिकता की जांच और भ्रष्टाचार विरोधी नीतियों और प्रथाओं की जांच।

3.सामुदायिक सहभागिता: यहाँ जिस मद की जाँच की गई है वह सामुदायिक सहभागिता है, मूल्यांकन संगठन के सामुदायिक सहभागिता के स्तर की विस्तृत जाँच से शुरू होता है। इसमें इस बात की खोज शामिल है कि संगठन किस हद तक स्थानीय समुदाय के साथ बातचीत करता है और उसमें खुद को शामिल करता है। इसमें पारस्परिक रूप से लाभकारी संबंध सुनिश्चित करने के लिए समुदाय के सदस्यों के साथ सहयोग, साझेदारी और संवाद शामिल हो सकते हैं। उदाहरण के लिए सामुदायिक आउटरीच कार्यक्रमों की समीक्षा, परोपकारी गतिविधियों का मापन और स्थानीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव का आकलन।

4.कर्मचारी कल्याण: यहाँ जाँच की जाने वाली वस्तुएँ कर्मचारी लाभ हैं, मूल्यांकन कर्मचारियों को प्रदान किए जाने वाले लाभों की गहन जाँच से शुरू होता है। इसमें मुआवज़ा पैकेज, स्वास्थ्य सेवा लाभ, सेवानिवृत्ति योजना और कार्यबल के समग्र कल्याण को बढ़ाने के उद्देश्य से अन्य भत्तों की विस्तृत समीक्षा शामिल है। ऑडिट इन लाभों की व्यापकता और निष्पक्षता की जाँच करता है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे उद्योग मानकों के अनुरूप हैं और कर्मचारी संतुष्टि और प्रतिधारण में योगदान करते हैं। कार्यस्थल सुरक्षा एक और महत्वपूर्ण पहलू है जिसमें कार्यस्थल सुरक्षा उपायों की जाँच शामिल है। ऑडिट एक सुरक्षित और संरक्षित कार्य वातावरण बनाने के लिए संगठन की प्रतिबद्धता का आकलन करता है। इसमें सुरक्षा प्रोटोकॉल, प्रशिक्षण पहल और कार्यस्थल दुर्घटनाओं को रोकने और कर्मचारियों की भलाई को बढ़ावा देने के उपायों के कार्यान्वयन का मूल्यांकन शामिल है। उदाहरण हैं कर्मचारी संतुष्टि सर्वेक्षणों का विश्लेषण, स्वास्थ्य और सुरक्षा प्रोटोकॉल की समीक्षा और विविधता और समावेशन पहलों का मूल्यांकन।

5.हितधारक सहभागिता: यहाँ जिन मदों की जाँच की गई है, वे हितधारक सहभागिता और संचार रणनीतियों के लिए तंत्रों का मूल्यांकन हैं। हितधारक

सहभागिता के लिए तंत्र, मूल्यांकन संगठन द्वारा अपने विविध हितधारकों के साथ सहभागिता करने के लिए नियोजित तंत्रों की जाँच करके शुरू होता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार सार्थक बातचीत को बढ़ावा देने, प्रतिक्रिया एकत्र करने और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में हितधारकों को शामिल करने के लिए उपयोग किए जाने वाले चैनलों और प्लेटफ़ॉर्म की खोज शामिल है। ऑडिट का उद्देश्य संगठन की सहभागिता रणनीतियों की गहराई और प्रभावशीलता को समझना है। जबकि संचार रणनीतियाँ संगठन की संचार रणनीतियों के विश्लेषण तक मूल्यांकन को बढ़ाती हैं। इसमें संदेश की स्पष्टता और पारदर्शिता सहित संगठन अपने हितधारकों के साथ कैसे संवाद करता है, इसकी विस्तृत समीक्षा शामिल है। ऑडिट विभिन्न संचार चैनलों के उपयोग, अपडेट की आवृत्ति और विभिन्न हितधारक समूहों को प्रासंगिक जानकारी देने की प्रभावशीलता का आकलन करता है।